कार्नेलिया का गीत

अरुण यह मधुमय देश हमारा!
जहाँ पहुँच अनजान क्षितिज को मिलता एक सहारा!
सरस तामरस गर्भ विभा पर, नाच रही तरुशिखा मनोहर।
छिटका जीवन हरियाली पर, मंगल कुंकुम सारा!
लघु सुरधुन से पंख पसारे, शीतल मलय समीर सहारे।
उड़ते खग जिस ओर मुँह किए, समझ नीड़ निज प्यारा!
बरसाती आँखों के बादल, बनते जहाँ भरे करुणा जल।
लहरें टकरातीं अनंत की, पाकर जहाँ किनारा!
हेम–कुंभ ले उषा सवेरे, भरती ढुलकाती सुख मेरे।
मदिर ऊँघते रहते जब, जग कर रजनी–भर तारा।

प्रसंग :– प्रस्तुत गीत जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित नाटक 'चंद्रगुप्त' के द्वितीय अंक के प्रारंभ में सेल्यूकस की पुत्री कार्नोलिया द्वारा गाया गया है। इस गीत में उसकी भारतीय सभ्यता और संस्कृति के प्रति अगाध आस्था व्यक्त हुई है। अपने पिता के साथ रहते हुए कार्नेलिया यहाँ के मनोरम प्राकृतिक पर्यावरण, भारतीयों के ज्ञान–गरिमा और प्रेम, करुणा आदि उदात्त मानवीय भावनाओं से परिचित और प्रभावित हुई थी। वह इस गीत में इन्हीं हृदयानुभूतियों को अभिव्यक्ति करती है।

व्याख्या :– कार्नेलिया गाती है – यह हमारा देश प्राकृतिक सुषमा तथा सौंदर्य का भंडार है। प्राची दिशा में सूर्य के उदय होने पर उसकी लालिमा इस मधुमय देश में बिखर जाती है। हमारा देश मधुरिमा एवं लालिमा से युक्त है। प्रायःकालीन सूर्य उदित होकर पृथ्वी को स्वर्णिम प्रकाश में आप्लावित कर देता है। हमारे देश का प्रभात अरुणिमा से भरा होता है। यहाँ पहुँचकर अनजान क्षितिज को भी सहारा अर्थात आश्रय प्राप्त हो जाता है। आशय यह है कि भारत की भूमि इतनी रमणीय एवं सुरम्य है कि जो भी बाहर से आता है उसे आश्रय मिल जाता है।

भारत का प्राकृतिक सौंदर्य भी अनोखा है। यहाँ सूर्योदय के समय सरोवरों में कमल के फूल खिलते हैं, उनके कोषों में पराग और उसकी सुगंध भरी होती है। सूर्य की सुनहली किरणें जब वृक्षों की चोटियों और शाखाओं से छनती हुई उन पुष्पों पर नृत्य करती हैं तब उनकी शोभा देखने लायक होती है। मंद–मंद पवन के झोंके पेड़ की डालियों को नृत्य के रूप में हिलाते हैं। सूर्य की सुनहरी किरणों से सारा प्रदेश ऐसे शोभायमान हो उठता है कि लगता है प्रकृति देवी ने मंगल कामना करते हुए चारों ओर कुंकुम और केसर की वर्षा कर दी है। शीतल, मंद, सुगंधित वन के सहारे छोटे–छोटे पक्षी चहचहाते हुए इस देश को अपनी आश्रय स्थली समझते हुए इधर ही चले आ रहे हैं। भारत सभी को शरण देता है।

कवि भारत की महिला का वर्णन करते हुए कहता है कि भारतवर्ष दया, सहानुभूति तथा करुणा भाव वाला देश है। यहाँ के लोगों की आँखों में परमीड़ा को देखकर आँसू बहते रहते हैं। वे किसी को दुखी नहीं देख सकते। उनके हृदय की करुणा आँखों के आँसुओं की राह बह निकलती है।

Scanned with CamScanner

जिस प्रकार विस्तृत समुद्र की लहरें विद्रोही और विकराल रूप धारण करके समुद्र से टकराती हैं, पर वहीं शांत हो जाती हैं। इसी प्रकार विभिन्न देशों के व्याकुल और विक्षुब्ध लोग भारत आकर अपार शांति का अनुभव करते हैं। उन्हें यहाँ किनारा अर्थात ठिकाना मिल जाता है।

कवि भारत के प्राकृतिक सौंदर्य का वर्णन करते हुए कहता है कि इस देश के सूर्योदय का दृश्य अवर्णनीय है। सूर्योदय से पूर्व उषा स्वर्ण कलश लेकर मेरे ऊपर सुखों की वर्षा करती है अर्थात जब कुछ समय पहले तक आकाश में तारे ऊँघते से प्रतीत होते हैं अर्थात छिपने की तैयारी कर रहे होते हैं तब उषा रूपी पनिहारिन आकाश रूपी कुएँ से अपने सुनहरे कलश में सुनहरे कलश में सुनहरा पानी लुढ़का देती है और लगता है वही प्रकाश चारों ओर फैल गया है। संसार के समस्त प्राणी हर्षोल्लास से भरे हुए हैं, सुखी हैं।

Scanned with CamScanner